हिन्दी विभाग

स्नातक तृतीय (III)

पत्र संख्या - 08

* भारत-दुर्दशा :- भाषा सम्बन्धी विचार

साहित्य का इतिहास बदलती हुई अभिरुचियों और संवेदनाओं का इतिहास होता है, जिसका सीधा संबंध आर्थिक और चिन्तनात्मक होता है। कुछ लोगों का कहना है कि आर्थिक परिवर्तनों के साथ साहित्यिक परिवर्तनों का तालमेल बैठा देना ही साहित्य का इतिहास है। भाषाई चेतना के विकास का भारतेन्दुयुगीन रचनाओं में महत्वपूर्ण स्थान है। उर्दू को प्राप्त शासकीय संरक्षण के सन्दर्भ में हिन्दी को उसका दाय दिलाने के लिए भारतेन्दु द्वारा विरचित 'हिन्दी भाषा केवल राजनीतिक कारणों से प्रेरित नहीं थी। अपितु तत्कालीन साहित्यिक भाषा में 'उर्दू-फारसी की जटिल पदावली का बहिष्कार भी इनकी रचनाओं की देन थी भारतेन्दु जी जब भारत-दुर्दशा की रचना में व्यस्त थे तब तक हिन्दी खड़ीबोली की आधारशिला तो तैयार की जा चुकी थी किन्तु उसका कोई निश्चित या व्यवस्थित स्वरूप स्थापित नहीं हो सका था प्रत्येक व्यक्ति (रचनाकार) खड़ी बोली को प्रतिष्ठित करने में अपनी-अपनी भूमिका निभा रहे थे।

इस समय तक उर्दू और संस्कृत की भाषा में प्रतिस्पर्धा थी। एक पक्ष उर्दू का तो दूसरा पक्ष संस्कृत का समर्थन था। किन्तु भारतेन्दु जी ने इसी भेद-भाव और विषमता को समाप्त कर समन्वय स्थापित करना चाहा। उन्होंने भारतीय जनता के सम्मुख खड़ी बोली की सहजता, सरलता एवं बोधगम्यता को रखा। आधुनिक गद्य साहित्य का पुनर्जागरण काल भारतेन्दु जी के नाम के द्वारा ही जाना जाता है क्योंकि आधुनिक गद्य साहित्य की परम्परा उन्होंने अपने नाटकों में प्रारंभ की।

भारत-दुर्दशा में भाषा का प्रयोग भारतेन्दु जी ने पात्रों की प्रकृति एवं योग्यता के अनुसार किया है उन्होंने इस नाटक की भाषा को स्वाभाविक प्रवाहमय एवं प्रभावी बनाने में काफी सफल हुए हैं। भाषा शैली में भारतेन्दु जी शब्द निर्माण एवं शब्द चयन में भी काफी सफल रहे हैं। इस नाटक में भाषा के प्रयोग के द्वारा ही किसी भी भाषा जन सामान्य की भाषा तथा लोकोक्तियों और मुहावरे भी सामने आते हैं।

भारतेन्दु जी ने पात्रों की प्रांतीय भाषा

मैं उनके किसी भी कथन को न बदलवाकर हिन्दी भाषा के प्रयोग से उस पात्र के कथन को उसी के अनुसार बताने का प्रयास किया है।

इस प्रकार यदि देखा जाए तो पूरे नाटक में भारतेन्दु जी ने जिन-जिन भाषाओं का प्रयोग किया वहाँ उसकी आवश्यकता थी। क्योंकि भारतेन्दु जी ने जनसामान्य की भाषा का ही प्रयोग किया है जन सामान्य की भाषा में ज्यादा मिठास होता है उसके दर्शक साधारण रूप में ही समझ लेता है। उन्होंने हिन्दी खड़ी बोली के गद्य और पद्य दोनों रूपों में स्थापित करना अपनी महती भूमिका निभाई। इस भाषा की लोकप्रियता को सिद्ध करने का प्रयास किया और उसमें काफी हद तक सफल हुए। भारतेन्दु युग को हिन्दी नवजागरण नाम से जाना जाता है। अन्ततः इन साहित्य कारों की देन रही कि आज हिन्दी हमारे राष्ट्र की भाषा बनचुकी है।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर (वैशाली)
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० - 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक
11/09/2020